छठे इमाम - जाफिरे सादिक (अलै.)

करो उस इमामे शशुम पर बुका
जो पन्द्रहवीं माहे रजब को उठा

या

करो उस इमामे शशुम पर बुका
जो शव्वाल की पन्द्रह को उठा

ख़िलाफत जों ही पायी मन्सूर ने
तो चुन-चुन के सादात का खूँ किया

दरख़्तों पा लटकाए सर सैकड़ो
हज़ारों को दीवारों में चुन दिया

बुलाया कई बार इन्हें भी मगर
था ऐजाज़ जालिम न कुछ कर सका

हुआ क़त्ले सादात से जब फ़राग़
तो आमादा फिर कत्ले शै पर हुआ

बिने ज़ैद को देके कुछ मालो ज़र
मकाँ पहले नारी से जलवा दिया

मदीने के हाकिम को फिर भेजा हुक्म
न जिन्दां रहे सादिके बा सफ़ा

मुहम्मद सुलेमान के फ़रजन्द ने
इन्हें ज़हर अंगूर में दे दिया

लिखो 'फ़िक्र' मनक़ूत मे साले फौत
हुए जाफर इब्ने मुहम्मद जुदा